IJAER/September-October 2015/Volume-4/Issue-5 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

हरिकृष्ण शास्त्री काव्य- संग्रह का अध्ययने

डॉ गोविंद राम चरोरा,

संस्कृत विभाग, महारानी श्री जया महाविद्यालय

भरतपुर, राज.

सार

हरीकृष्णशास्त्रीके प्रकृत काव्य की रचना दसवीं शती के पहले नहीं हुई। त्रिविक्रम भट्ट द्वारा रचित 'नलचम्पू', जो दसवीं सदी के प्रारम्भ की रचना है, चम्पू का प्रसिद्ध उदाहरण है। इसके अतिरिक्त सोमदेव सुरि द्वारा रचित यशःतिलक, भोजराज कृत चम्पू रामायण, कवि कर्णपूरि कृत आनन्दवृन्दावन, गोपाल चम्पू (जीव गोस्वामी), नीलकण्ठ चम्पू (नीलकण्ठ दीक्षित) और चम्पू भारत (अनन्त कवि) दसवीं से सत्रहवीं शती तक के उदाहरण हैं। यह काव्य रूप अधिक लोकप्रिय न हो सका और न ही काव्यशास्त्र में उसकी विशेष मान्यता हुई। हिन्दी में यशोधरा (मैथिलीशरण गुप्त) को चम्पू-काव्य कहा जाता है, क्योंकि उसमें गद्य-पद्य दोनों का प्रयोग हुआ है। गद्य और पद्य के इस मिश्रण का उचित विभाजन यह प्रतीत होता है कि भावात्मक विषयों का वर्णन पद्य के द्वारा तथा वर्णनात्मक विषयों का विवरण गद्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाय। परन्तु चंपूरचयिताओं ने इस मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य पर विशेष ध्यान न देकर दोनों के संमिश्रण में अपनी स्वतंत्र इच्छा तथा वैयक्तिक अभिरुचि को ही महत्व दिया है।

मुख्यशब्द: प्रकृत काव्य, चम्पू काव्य

परिचय

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री (सन 1904 ईस्वी --) साहित्य, न्याय-शास्त्र और वेदान्त दर्शन के अध्येता विद्वान, तंत्र-विद्या के ज्ञाता, संस्कृत गद्य और पद्य के लेखक और आशुकवि थे।

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री, तैलंग ब्राह्मणों के आत्रेय गोत्र में कृष्ण-यजुर्वेद के तैत्तरीय आपस्तम्ब में मूलपुरुष श्रीव्येंकटेश अणणम्मा और शिवानन्द गोस्वामी के वंशज थे।इनके पिता का नाम गोपीकृष्ण गोस्वामी और माता का नाम काशी देवी था। कवि शिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री इनके बहनोई थे। इनका विवाह मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में ओरछा राजगुरुओं के परिवार में हुआ।

साहित्यिक अवदान

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री ने 'आदर्शौदार्यम्' (नाटक), 'वंशप्रशस्ति' (अपने वंश का इतिहास) और 'ललित कथा कल्पलता' (संस्कृत-कहानी संग्रह) के अलावा करीब २५ अन्य पुस्तकों की रचना की है। 'दिव्यालोक' नामक मौलिक संस्कृत महाकाव्य की रचना इनका सबसे बड़ा साहित्यिक अवदान है।

इन्होनें लगभग सभी विधाओं में साहित्य सर्जन किया है, यहाँ तक कि मौलिक रचनाओं के अलावा अन्य भाषाओँ की प्रसिद्ध कृतियों का संस्कृत में अनुवाद भी किया है । इनमें आचार्य चतुरसेन

शास्त्री का उपन्यास 'आम्रपाली' तथा टैगोर का उपन्यास 'चोखेर बाली' (जिसे 'उद्वेजिनी' नाम से अनुवादित किया), 'आँख की किरकिरी' आदि उल्लेखनीय हैं। इनकी रचनाओं की विविधता से प्रभावित हो कर केन्द्रीय साहित्य अकादमी की प्रसिद्ध संस्कृत पत्रिका 'संस्कृत प्रतिभा' के तत्कालीन संपादक डॉ॰ वी.राघवनआग्रह करके इनसे पत्रिका के लिए लगभग सभी अंकों में गद्य अथवा पद्य रचना लिखवाते थे। सन 1945 से 1979 तक इनकी रचनाएँ देश की विभिन्न संस्कृत पत्रिकाओं में छपती रहीं।

संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान देवर्षि कलानाथ शास्त्री के अनुसार इनकी एक अन्य विशेषता यह भी थी कि वे प्रत्येक वसंत ऋतु में वसंत के स्वागत में कविता, गद्य या नीति अवश्य लिखते थे। उनकी वसंत का स्वागत करती ऐसी ही एक रचना का अंश है"किंशुककदम्बकुंज गुंजितमधुपपुंज लोचनललामलोकमनोहरवसन्त प्रियवर वसन्त", जिसे पढ़ कर कवि निराला की याद आ जाती है। ये बहुत से ऐसे पद्य लिखते थे जिनके प्रथम अक्षरों से किसी का नाम या कोई वाक्य बन जाये। आशुकवि होने के कारण संस्कृत सम्मेलनों में वे ऐसी प्रशस्तियां मिनटों में पद्यबद्ध करके सुना दिया करते थे। इन्होंने अपने पूर्वज शिवानन्द गोस्वामी के ग्रन्थ 'सिंह-सिद्धांत-सिन्धु' पर भी शोधात्मक लेखन और सम्पादन भी किया।।[3] अहमदाबाद में रह कर इन्होंने रामानंद दर्शन पर अनेक लेख एवं पुस्तकें लिखीं और अपनी उत्तरावस्था अपने पूर्वजों के जागीरी ग्राम महापुरा में व्यतीत करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' सहित कुछ अन्य रचनाओं का संस्कृत में अनुवाद किया।[4]

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री ने चरित्र काव्य के रूप में उपन्यास विधा की विशिष्ट शैली में जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी का 'आचार्य विजय' नाम से जीवन चरित्र लिखा, जिसमें न केवल उनके सिद्धान्त, बल्कि उनका पूरा जीवन-वृत्त, दर्शन, शास्त्रार्थों, उपदेश यात्राओं, शिष्यों, मान्यताओं तथा रामानन्द संप्रदाय के इतिहास का भी सम्पूर्णता के साथ समावेश है। रामानंद सम्प्रदाय के विद्वान मानते हैं कि संस्कृत जगत में 'श्रीशिवराजविजय' के बाद सुललित प्रबंध के रूप में यदि कोई अन्य ग्रन्थ है तो वह गोस्वामी जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'आचार्य विजय' ही है, जो पहली बार अयोध्या से १९७७ में प्रकाशित हुआ था। इस विशाल गद्यकाव्य में ५९ परिच्छेद हैं, जहाँ बीच बीच में पद्य भी हैं। अतः इसे 'चम्पूकाव्य' भी कहा जा सकता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हरिकृष्ण शास्त्री का संस्कृत में लिखे इस ग्रन्थ के माध्यम से रामानंद संप्रदाय को योगदान इतना महत्वपूर्ण माना गया कि संप्रदाय के कुछ पीठाधीश्वरों ने इसके हिंदी अनुवाद के साथ पुनः प्रकाशन की योजना बनाई जिसके तहत रेवासा धाम, सीकर तथा हंसा प्रकाशन के द्वारा सन २०११ में 'श्रीआचार्यविजय' (हिंदी अनुवाद) [6] के नाम से यह ग्रन्थ उपलब्ध हुआ।

उद्देश्य

1. चम्पू नाम के प्रकृत काव्य की रचना दसवीं शती के पहले नहीं हुई।
2. गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री ने चरित्र काव्य के रूप में उपन्यास विधा की विशिष्ट शैली है।

राजकीय सेवा तथा अन्य संप्रदायों को योगदान

विवाह के बाद गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री टीकमगढ़ (मध्य प्रदेश) में शिक्षाविभाग में अध्यापक हो गए थे, किन्तु १९४५ में पिता की मृत्यु के बाद वे जयपुर लौट आये। अपने पैतृक गाँव महापुरा में इन्होंने सबसे पहले जो 'संस्कृत पाठशाला' स्थापित की थी, वही आज पल्लवित हो कर राजकीय स्नातकोत्तर संस्कृत कॉलेज बन गया है।

इन्होंने राजस्थान सरकार के जागीर कमिश्नर कार्यालय, आयुर्वेद विभाग आदि में भी लिपिकीय सेवा की और बाद में वे राजस्थान संस्कृत शिक्षा निदेशालय बन जाने पर साहित्याध्यापक, प्रोफ़ेसर तथा उदयपुर, अजमेर, नाथद्वारा आदि कई राजकीय संस्कृत महाविद्यालयों के प्राचार्य रहे। वे राजस्थान राजकीय सेवा से सन १९६७ में सेवानिवृत्त होकर संस्कृत साहित्य की सेवा में लग गए।[8]

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री के वैदुष्य से प्रभावित होकर अनेक संप्रदायों, महंतों व पीठाधीश्वरों ने उन्हें सम्मान देकर अपना "शास्त्री" बनाया। अमरेली, कामवन आदि पुष्टिमार्गीय (वल्लभाचार्य) पीठों में वे गोस्वामी सुरेश बावा जैसे अनेक आचार्यों एवं महंतों के गुरु रहे। उसके बाद उन्होंने अहमदाबाद के पास पालडी में स्थित रामानन्द सम्प्रदाय के कौशलेन्द्र मठ में वेदांत के विभागाध्यक्ष बन कर अपार ख्याति अर्जित की। यहीं उनसे अनुरोध किया गया था कि वे जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य का संस्कृत में विशाल जीवन चरित्र लिखें।

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री को १९७८ में राजस्थान संस्कृत अकादमी ने उनके काव्य 'दिव्यालोक' पर 'महाकवि माघ पुरस्कार' प्रदान दिया और 'गोस्वामी-सभा' द्वारा इन्हें 'गद्य-पद्य-सम्राट' की उपाधि प्रदान की गई।।[11] राजस्थान सरकार की योजना के अंतर्गत संस्कृत दिवस के अवसर पर उन्हें विशिष्ट विद्वान के रूप में भी सम्मानित किया गया।

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोध-कार्य भी हुआ तथा डॉ॰ सरला शर्मा को उनके शास्त्रीजी पर लिखे शोध प्रबंध पर राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा पी.एचडी. की उपाधि प्रदान की गई है ।

सन 1904 ईस्वी में महापुरा (जयपुर) में जन्मे गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री साहित्य, न्याय-शास्त्र और वेदांत दर्शन के जाने माने अध्येता विद्वान, तंत्र-विद्या के ज्ञाता, संस्कृत गद्य और पद्य के जाने-माने लेखक और आशुकवि थे। इनके पिता का नाम गोपीकृष्ण गोस्वामी और माता का नाम ऐनादेवी था। इनका विवाह मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ में ओरछा राजगुरुओं के परिवार में हुआ। कवि शिरोमणि भट्ट मथुरानाथ शास्त्री के साले गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री तैलंग ब्राह्मणों के आत्रेय गोत्र में कृष्ण-यजुर्वेद के तैत्तरीय आपस्तम्ब में मूलपुरुष श्रीव्येंकटेश अणणम्मा और शिवानन्द गोस्वामी के वंशज थे।

चंपू

चम्पू श्रव्य काव्य का एक भेद है, अर्थात गद्य-पद्य के मिश्रित् काव्य को चम्पू कहते हैं। गद्य तथा पद्य मिश्रित काव्य को "चंपू" कहते हैं। काव्य की इस विधा का उल्लेख साहित्यशास्त्र के प्राचीन आचार्यों- भामह, दण्डी, वामन आदि ने नहीं किया है। यों गद्य पद्यमय शैली का प्रयोग वैदिक साहित्य, बौद्ध जातक, जातकमाला आदि अति प्राचीन साहित्य में भी मिलता है। चम्पूकाव्य परंपरा का प्रारम्भ हमें अथर्व वेद से प्राप्त होता है। चम्पू नाम के प्रकृत काव्य की रचना दसवीं शती के पहले नहीं हुई। त्रिविक्रम भट्ट द्वारा रचित 'नलचम्पू', जो दसवीं सदी के प्रारम्भ की रचना है, चम्पू का प्रसिद्ध उदाहरण है। इसके अतिरिक्त सोमदेव सुरि द्वारा रचित यशःतिलक, भोजराज कृत चम्पू रामायण, कवि कर्णपूरि कृत आनन्दवृन्दावन, गोपाल चम्पू (जीव गोस्वामी), नीलकण्ठ चम्पू (नीलकण्ठ दीक्षित) और चम्पू भारत (अनन्त कवि) दसवीं से सत्रहवीं शती तक के उदाहरण हैं। यह काव्य रूप अधिक लोकप्रिय न हो सका और न ही काव्यशास्त्र में उसकी विशेष मान्यता हुई। हिन्दी में यशोधरा (मैथिलीशरण गुप्त) को चम्पू-काव्य कहा जाता है, क्योंकि उसमें गद्य-पद्य दोनों का प्रयोग हुआ है। गद्य और पद्य के इस मिश्रण का उचित विभाजन यह प्रतीत होता है कि भावात्मक विषयों का वर्णन पद्य के द्वारा तथा

वर्णनात्मक विषयों का विवरण गद्य के द्वारा प्रस्तुत किया जाय। परन्तु चंपूरचयिताओं ने इस मनोवैज्ञानिक वैशिष्ट्य पर विशेष ध्यान न देकर दोनों के संमिश्रण में अपनी स्वतंत्र इच्छा तथा वैयक्तिक अभिरुचि को ही महत्व दिया है।

चोखेर बाली (उपन्यास)

चोखेर बाली रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखी गई एक उपन्यास है। उपन्यास की केन्द्रीय किरदार बिनोदिनी एक युवा विधवा है,जो समाज के दुर्व्यवहार के कारण नरकी ज़िन्दगी जीने को मज़बूर है। वह तंग आकर अपनी इस हालत के लिए ज़िम्मेदार व्यक्ति से बदला लेने का निर्णय करती है। इस रचना पर २००३ में ऋतुपर्णो घोष ने फिल्म चोखेर बाली का निर्माण किया था। श्रेणी:बांग्ला उपन्यास श्रेणी:बांग्ला साहित्य.

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र वह ज्ञान है जो परम् सत्य और प्रकृति के सिद्धांतों और उनके कारणों की विवेचना करता है। दर्शन यथार्थ की परख के लिये एक दृष्टिकोण है। दार्शनिक चिन्तन मूलतः जीवन की अर्थवत्ता की खोज का पर्याय है। वस्तुतः दर्शनशास्त्र स्वत्व, अर्थात प्रकृति तथा समाज और मानव चिंतन तथा संज्ञान की प्रक्रिया के सामान्य नियमों का विज्ञान है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है। दर्शन उस विद्या का नाम है जो सत्य एवं ज्ञान की खोज करता है। व्यापक अर्थ में दर्शन, तर्कपूर्ण, विधिपूर्वक एवं क्रमबद्ध विचार की कला है। इसका जन्म अनुभव एवं परिस्थिति के अनुसार होता है। यही कारण है कि संसार के भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने समय-समय पर अपने-अपने अनुभवों एवं परिस्थितियों के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के जीवन-दर्शन को अपनाया। भारतीय दर्शन का इतिहास अत्यन्त पुराना है किन्तु फिलॉसफ़ी (Philosophy) के अर्थों में दर्शनशास्त्र पद का प्रयोग सर्वप्रथम पाइथागोरस ने किया था। विशिष्ट अनुशासन और विज्ञान के रूप में दर्शन को प्लेटो ने विकसित किया था। उसकी उत्पत्ति दास-स्वामी समाज में एक ऐसे विज्ञान के रूप में हुई जिसने वस्तुगत जगत तथा स्वयं अपने विषय में मनुष्य के ज्ञान के सकल योग को ऐक्यबद्ध किया था। यह मानव इतिहास के आरंभिक सोपानों में ज्ञान के विकास के निम्न स्तर के कारण सर्वथा स्वाभाविक था। सामाजिक उत्पादन के विकास और वैज्ञानिक ज्ञान के संचय की प्रक्रिया में भिन्न भिन्न विज्ञान दर्शनशास्त्र से पृथक होते गये और दर्शनशास्त्र एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में विकसित होने लगा। जगत के विषय में सामान्य दृष्टिकोण का विस्तार करने तथा सामान्य आधारों व नियमों का करने, यथार्थ के विषय में चिंतन की तर्कबुद्धिपरक, तर्क तथा संज्ञान के सिद्धांत विकसित करने की आवश्यकता से दर्शनशास्त्र का एक विशिष्ट अनुशासन के रूप में जन्म हुआ। पृथक विज्ञान के रूप में दर्शन का आधारभूत प्रश्न स्वत्व के साथ चिंतन के, भूतद्रव्य के साथ चेतना के संबंध की समस्या है। .

निष्कर्ष

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री ने 'आदर्शौदार्यम्' (नाटक), 'वंशप्रशस्ति' (अपने वंश का इतिहास) और 'ललित कथा कल्पलता' (संस्कृत-कहानी संग्रह) के अलावा करीब अन्य पुस्तकों की रचना की है। 'दिव्यालोक' नामक मौलिक संस्कृत महाकाव्य की रचना इनका सबसे बड़ा साहित्यिक अवदान है।

इन्होनें लगभग सभी विधाओं में साहित्य सर्जन किया है, यहाँ तक कि मौलिक रचनाओं के अलावा अन्य भाषाओँ की प्रसिद्ध कृतियों का संस्कृत में अनुवाद भी किया है । इनमें आचार्य चतुरसेन शास्त्री का उपन्यास 'आम्रपाली' तथा उपन्यास 'चोखेर बाली' (जिसे 'उद्वेजिनी' नाम से अनुवादित किया), 'आँख की

किरकिरी' आदि उल्लेखनीय हैं। इनकी रचनाओं की विविधता से प्रभावित हो कर केन्द्रीय साहित्य अकादमी की प्रसिद्ध संस्कृत पत्रिका 'संस्कृत प्रतिभा' के तत्कालीन संपादक डॉ॰ वी.राघवन[2] आग्रह करके इनसे पत्रिका के लिए लगभग सभी अंकों में गद्य अथवा पद्य रचना लिखवाते थे। सन 1945 से 1979 तक इनकी रचनाएँ देश की विभिन्न संस्कृत पत्रिकाओं में छपती रहीं।संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान देवर्षि कलानाथ शास्त्री के अनुसार इनकी एक अन्य विशेषता यह भी थी कि वे प्रत्येक वसंत ऋतु में वसंत के स्वागत में कविता, गद्य या नीति अवश्य लिखते थे।

उनकी वसंत का स्वागत करती ऐसी ही एक रचना का अंश है"किंशुककदम्बकुंज गुंजितमधुपपुंज लोचनललामलोकमनोहरवसन्त प्रियवर वसन्त", जिसे पढ़ कर कवि निराला की याद आ जाती है। ये बहुत से ऐसे पद्य लिखते थे जिनके प्रथम अक्षरों से किसी का नाम या कोई वाक्य बन जाये। आशुकवि होने के कारण संस्कृत सम्मेलनों में वे ऐसी प्रशस्तियां मिनटों में पद्यबद्ध करके सुना दिया करते थे। इन्होंने अपने पूर्वज शिवानन्द गोस्वामी के ग्रन्थ 'सिंह-सिद्धांत-सिन्धु' पर भी शोधात्मक लेखन और सम्पादन भी किया।।[3] अहमदाबाद में रह कर इन्होंने रामानंद दर्शन पर अनेक लेख एवं पुस्तकें लिखीं और अपनी उत्तरावस्था अपने पूर्वजों के जागीरी ग्राम महापुरा में व्यतीत करते हुए रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'गीतांजलि' सहित कुछ अन्य रचनाओं का संस्कृत में अनुवाद किया।[4]

गोस्वामी हरिकृष्ण शास्त्री ने चरित्र काव्य के रूप में उपन्यास विधा की विशिष्ट शैली में जगद्गुरु स्वामी रामानन्दाचार्य जी का 'आचार्य विजय' नाम से जीवन चरित्र लिखा, जिसमें न केवल उनके सिद्धान्त, बल्कि उनका पूरा जीवन-वृत्त, दर्शन, शास्त्रार्थों, उपदेश यात्राओं, शिष्यों, मान्यताओं तथा रामानन्द संप्रदाय के इतिहास का भी सम्पूर्णता के साथ समावेश है।[5] रामानंद सम्प्रदाय के विद्वान मानते हैं कि संस्कृत जगत में 'श्रीशिवराजविजय' के बाद सुललित प्रबंध के रूप में यदि कोई अन्य ग्रन्थ है तो वह गोस्वामी जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'आचार्य विजय' ही है, जो पहली बार अयोध्या से १९७७ में प्रकाशित हुआ था। इस विशाल गद्यकाव्य में परिच्छेद हैं, जहाँ बीच बीच में पद्य भी हैं। अतः इसे 'चम्पूकाव्य' भी कहा जा सकता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी हरिकृष्ण शास्त्री का संस्कृत में लिखे इस ग्रन्थ के माध्यम से रामानंद संप्रदाय को योगदान इतना महत्वपूर्ण माना गया कि संप्रदाय के कुछ पीठाधीश्वरों ने इसके हिंदी अनुवाद के साथ पुनः प्रकाशन की योजना बनाई जिसके तहत रेवासा धाम, सीकर तथा हंसा प्रकाशन के द्वारा में 'श्रीआचार्यविजय' (हिंदी अनुवाद)[6] के नाम से यह ग्रन्थ उपलब्ध हुआ।

संदर्भ

1. 'उत्तर भारतीय आन्ध्र-तैलंग-भट्ट-वंशवृक्ष' (भाग-2) संपादक स्व. पोतकूर्ची कंठमणि शास्त्री और करंजी गोकुलानंद तैलंग द्वारा 'शुद्धाद्वैत वैष्णव वेल्लनाटीय युवक-मंडल', नाथद्वारा से वि. सं. 2007 में प्रकाशित
2. उत्तरदेशीय आन्ध्र संगति, जयपुर द्वारा में प्रकाशित शोध पत्रिका समवेत प्रवेशांक : (संपादक :हेमंत शेष)
3. .'श्रीआचार्यविजय' (हिंदी अनुवाद), रेवासा धाम (सीकर) तथा हंसा प्रकाशन (जयपुर), 1977,
4. 'वंश प्रशस्ति' (काव्य) : लेखक : स्वयं गोस्वामी जी
5. 'श्रीआचार्यविजय' (हिंदी अनुवाद), रेवासा धाम (सीकर) तथा हंसा प्रकाशन (जयपुर), 1977 में प्रकाशित तथ्य